चलो चलो रे साथ

चलो चलो रे साथ, आपन जईए धाम।
मूल वतन धनिएं बताया, जित ब्रह्मसृष्ट स्यामा जी स्याम।।

मोहोल मंदिर अपने देखिए, देखिए खेलन के सब ठौर।
जित है लीला स्याम स्यामा जी, साथ जी बिना नहीं कोई और।।

साथ मिल तुम आए धाम से, भूल गए सो मूल मिलाप।
भूलियां धाम धनी के वचन, न कछु सुध रही जो आप।।

अब जो घड़ी रहो साथ चरने, होए रहियो तुम रेनु समान ।
इत जागे को फल एही है, चेत लीजो कोई चतुर सुजान।।

ज्यों ज्यों गरीबी लीजे साथ में,त्यों-त्यों धनी को पाइए मान।
इत दोए दिन का लाभ जो लेना, एही वचन जानो परवान।।

इन खिनका है जो लटका, जीत चलो भांवे हार।
महामत हेत कर कहें साथ को, बिध बिध की करत पुकार।।